डागर परम्परा के संरक्षण में उस्ताद फ़हीमुद्दीन डागर'

(शोधकर्ता)
कु. श्रुति गुप्ता
शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ
निर्देशिका
डा. किन्शुक श्रीवास्तव
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

"ध्रुवपद के लिए जरूरी है कि वह रागात्मक, स्वरात्मक, वर्णात्मक, शब्दात्मक, तालात्मक और रसात्मक हो, सुरात्मक, राग सच्चा हो सुरीला हो, शब्दों को पेश कर रहा हो, पद के शब्द सही हो, उच्चारण सही हो, उसका वर्णन बहुत सुन्दर तरीके से सामने आए, ताल में विभक्त है लिहाजा तालात्मक, लयात्मक उसका ताल सुन्दर रूप से प्रकाशित हो प्रकट हो। लयात्मक यानी उसकी लय सुन्दर हो और रसात्मक यानि भारतीय शास्त्रीय संगीत में रस की एहमियत बहुत है, रागात्मक यानि भाव इसमें खिले के वो भाव आने चाहिए।" 1

ऐसी तालीम में पूर्ण उस्ताद फहीमुद्दीन डागर ध्रुवपद गायन के लिए एक सदी के बराबर थे, उस्ताद फदीमुद्दीन खां डागर का जन्म अलवर के राजघराने में 1927 ई. में हुआ, आप पद्मभूषण अल्लाबन्दे रहीमुद्दीन खां डागर की एकलौती सन्तान थे। उन्हीं के सिद्धान्तों का आपके व्यक्तित्व और गायकी पर गहरा प्रभाव रहा, आपके लिए भी शब्दों के अनुसार 'संगीत मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि साधना और आराधना का विषय है, अपने पिता उस्ताद रहीमुद्दीन से अर्जित शिक्षा को आध्यात्मिक रूप में आपने आगे बढ़ाया, जिसे याद करते हुई आप कहते थे, ध्रुवपद का आधार कलात्मक, विद्यात्मक, आध्यात्मक होना चाहिए।

डागर परम्परा की तालीम के अनुसार आपकी सांगीतिक शिक्षा 5 वर्ष की उम्र से ही शुरू हुई, जिसमें 10 साल से 14 तक सिर्फ नाद योग और 52 अलंकारों की तालीम होती है, ध्रुवपद की नहीं होती। सुबह, शाम और रात का एक–एक राग लेकर उसमें तमाम अलंकार तैयार करवाये जाते है, उसका फायदा यह होता है कि जब बच्चे को ध्रुवपद की तालीम दी जाने लगती है तब वह इस अलंकारों को सही तरह से बरतने के लायक हो जाता है और फिर जब रागों की तालीम शुरू होती है तो उस पर सोचने के लिए तो पूरा जीवन ही लग जाता है। 2

"तालीम का सिलसिला कुछ यूं रहता है कि सुबह 3 बजे और फिर 6 बजे तक आकार भरना, इतने में बड़े मिया यानी हमारे हुजूर नमाज़ पढ़कर आ जाते थे, फिर एक बजे एक, 2 बजे तक कई–कई दफे 3 बजे तक भी तालीम चलती रहती थी। मैं, अमीनुद्दीन और मेरे भाई मेरूखण्ड की ताने कहते रहते थे। जहाँ कहीं किसी ने गलती की, कि बांस की लंबी खपच्ची से चटाक से पांव पर मार पड़ती थी। 'क्लास' खत्म होती तो फिर हमारी अम्मा और चाची हमारी चोटो पर घी में पकाकर चूना और हल्दी लगा देती थी। यह रोज का सिलसिला था। तालीम का यह सिलसिला काफी लम्बा चला लगभग 30–35 साल। 26–27 वर्ष की उम्र से मैंने प्रोग्राम करना शुरू किया। सबसे पहला प्रोग्राम यहीं दिल्ली में हुआ था। यह कोई सन् 1953 या 1953 की बात हैं, इस बीच मैं लखनऊ व दिल्ली रेडियो से गाता था। वालिद साहब के साथ बरसों तानपूरा छेड़ा और जब तक वे जिंदा रहे तब तक उनके साथ भी गाता रहा। मैंने लगभग 10–12 वर्ष जियाउद्दीन डागर से रूद्रवीणा की बाकायदा तालीम हासिल की, पर उसका 'परफोरमेन्स कभी नहीं दिया।" 3

साथ ही आपने अपने दूसरे चाचाओं उस्ताद हुसैनुद्दीन खाँ डागर उर्फ (तानसेन पाण्डेय) और उस्ताद इमामुद्दीन खां डागर से भी समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त किया है आपने संस्कृत भाषा का ज्ञान अपने पिता तथा पंडित गिरधारी लाल शास्त्री से अर्जित किया।

आप अपनी परम्परा की 19वीं पीढ़ी है इससे पहले की ध्रुवपद का संरक्षण किये 'डागर परम्परा' की पीढ़ीयों पर यदि प्रकाश डाले तो पता चलेगा के बाबा बहराम खाँ के नाम से सुविख्यात यह घराना कैसे इस कलाशैली को संरक्षित किये हुये है।

120 वर्ष की दीर्घायु के धनी बाबा बहराम खां ने अपने पुत्रों, भतीजों, पौत्र एवं भतीजों के पुत्र आदि सभी को अपनी अमूल्य धरोहर रूप ध्रुवपद गायकी से संभावित कर सुदृढ़, प्रतिष्ठित एवं सुदीर्घ परम्परा को सौंपा। "बाबा ने अपने जीवन के 120 वर्षों के श्रेष्ठ समय को जयपुर में ही बिताया, यहीं आकर उन्होंने गायकी को अभूतपूर्व रूप से शुद्ध बनाया। बाबा की मृत्यु भी जयपुर में हुई, उनका आश्रम आज जयपुर में 'बहराम खां भवन' के रूप में प्रसिद्ध है, जो रामगंज चौपड़ से आगे उत्तर की ओर है, इसे 'बहराम खां की चौखट' नाम से पुकारा जाता है। उनके अनेक प्रतिभाशाली शिष्य तैयार हुए, जिनमें उनकी सुदीर्घ आयु से लाभान्वित हुए। बहराम खां के भतीजे मुहम्मद जान के परिवार की वंश परम्परा जिनके द्वारा वर्तमान तक यह शैली प्रवाहमान है। इसमें मुहम्मद जान खां के पुत्र

उ. जाकिरूद्दीन खां, उ. अल्लाबन्दे खां जो अपनी जुगलबन्दी का बेमिसाल उदाहरण बने, ये दोनों इस घराने के अद्वितीय गायक माने जाने थे। 4 ये बहराम खां के वंशज तो थे ही किन्तु आधुनिक युग के पहले पच्चीस वर्षों में देश में उनके जोड़ के दूसरे ध्रुवपद–गायक नहीं थे। इनकी गायकी को इनके सुपौत्रों ने आगे पीढ़ी तक बढ़ाया जिनमें उ. जाकिरूद्दीन खां के सिर्फ एक ही पुत्र उ. जियाऊद्दीन खां थे। ये एक महान गायक और कुशल वीणा वादक थे। उ. जियाऊद्दीन खां का देहान्त जल्दी हो गया था, इनके पुत्रों में 19 पीढ़ी के अन्तर्गत उ. मोईनुद्दीन खां डागर (रूद्रवीणा) तथा उ. फरीदुद्दीन खां डागर ध्रुवपद गाते थे।

इसी प्रकार उ. अल्लाबन्दे खां का स्वर्गवास सन् 1925 ई. में हुआ, इनके चार पुत्र थे, उ. नसीरूद्दीन खां, उ. रहीमुद्दीन खां, उ. इमामुद्दीन खां, उ. हुसैनुद्दीन खां जो (तानसेन पाण्डे) के नाम से जाने जाते थे।

आप सभी की पारम्परिक तालीम हुई। सभी ने अपने पूर्वजों तथा भईयों से डागर घराने की गायकी को कंठस्थ किया तथा इस परम्परा को आगे की पीढ़ी को भी सिखाया। इनमे नसीररूद्दीन खां के चारों पुत्रों ने जब परम्परा की 19वीं पीढ़ी में कदम रखा तो जुगलबन्दी में बहुत नाम कमाया व डागर बन्धु के नाम से प्रसिद्ध हुये जिनमें उ. नसीर मोइनुद्दीन डागर व उ. नसीर अमीनुद्दी (सीनियर डागर) व इनके छोटे भाई उ. नसीर ज़हीरूद्दीन व फैयानुद्दीन डागर (जूनियर डागर) के नाम से जाने गए। आगे रहीमुद्दीन जी के पुत्र उ. फहीमुद्दीन खां डागर इसी पीढ़ी के विख्यात ध्रुवपद गायक हुए, तथा हुसैनुद्दीन खां डागर के पुत्र सईदुद्दीन खां डागर भी इसी पीढ़ी के कलाकारों में से एक रहे।

19वीं पीढ़ी के आप सभी भाईयों से मिलकर ध्रुवपद की परवरिश को और प्रतिष्ठापित किया। दु:खद समय तब आया, जब आप आठ भाईयों में से उ. मोईनुद्दीन का स्वर्गवास 24 मई 1966 को हो गया परन्तु आप सातों भाईयों ने फिर भी ध्रुवपद में झंडे की उच्च शिखर तक फेहराए रखा जिसके चलते आप लोगों ने 'डागर सप्तक' नाम से परफोर्मेन्स दी। 5

प्रस्तुत गायन सम्मेलन से गायकी की विशेषताऐं उजागर हुई जो परम्परागत है, जिनमें विशेष है :

डागर परम्परा में कण और रूद्रवीणा सहगामी माने जाते है। वीणा के कई ऐसे वादन भेदों की खोज इस परम्परा में हुई हैं, जिन्हें कण्ठ में सुन्दर रीति से प्रस्तुत किया जा सकता है।

डागर परम्परा में गायन प्रस्तुति में भाव पक्ष प्रबल रहता है और उसमें भक्ति, वीर एवं श्रृंगार के ध्रुवपद और धमार को पूर्ण रूप भाव से अभिव्यक्त करते है।

पहला प्रोग्राम जयपुर में 1980 में फिर भोपाल में 1983 तथा तीसरा कोलकत्ता में हुआ। वर्तमान में 20 वीं पीढ़ी में इस परम्परा के शिवाय बहुत है परन्तु परिवार में उ. फैयाजऊद्दीन एवं सईदुद्दीन के सुपुत्र अनीसद्दीन व नफीसद्दीन जो परम्परा को संभाले है।

'डागर परम्परा' में तालीम सबकी एक सी हुई, परन्तु सबने अलग–अलग ढंग से खुबसूरत बना के ध्रुवपद को गाया। "ध्रुवपद शब्द की सही व्याख्या उ. फहीमुद्दीन डागर इस प्रकार करते है : ध्रुवपद यानि ध्रुव–पद ध्रुव का मतलब है अटल मुस्तम्किल, पाबंद। एक बहुत रोशन, शक्तिशाली कला जिनकी बुनियाद पर हमारा भारतीय संगीत कायम है संगीत यदि भाषा है तो उसका ग्रामर है।"6

शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान फहीमुद्दीन खां डागर के पास था। वे बड़ी बारीकी से इसे समझाते तथा गाकर भी अंतर बताते थे। उनके शब्दों में 'केवल स रे ग म प स्वर ध्रुवपद नहीं है। ध्रुवपद तो एक स्कनबंजपवदंस" नइरमबज है, जिसमें साहित्य की समझ होना भी जरूरी है। ध्रुवपद केवल पद या बंदिश का नाम नहीं है, ध्रुवपद केवल पखावजी के साथ भिड़न्त भी नहीं, न ही दुगुन, तिगुन लयकारी मात्र ही ध्रुवपद है, ध्रुवपर भारतीय संस्कृति का पर्याय है। छन्द, प्रबन्ध, राग, रस सब कुछ समाहित है इसमें, यह ध्रुवपद की विशेषता है कि आप एक बन्दिश याद कीजिए और पूरा राग साकार हो उठे। 7

भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा राग है, एक राग केवल रचनाओं के माध्यम से पूरी तरह समझा जा सकता है, रचनाओं से ही राग का रूप मजबूत बनता है। राग के वर्जित स्वरों, अल्पत्व, बहुत्व, संवादी आदि राग रचनात्मक तत्वों का ध्रुवपद में पूर्ण रूप से परिपालन होता है, राग से सम्बन्धित नियमों का पूर्णरूपेण पालन ध्रुवपद गायन में करना आवश्यक समझा जाता है।

डागर शैली के ध्रुवपद गायन में भी स्वर, लय, ताल, ध्वनि उत्पादन, ध्वनि संवर्धन, शुद्ध मुद्रा और शब्दों के सही उच्चारण के सम्पूर्ण ज्ञान पर डागर परम्परा का आधार बना।

उ. फहीमुद्दीन खां डागर के शिष्यों के साक्षात्कार से यह ज्ञात होता है कि डागर परम्परा की तालीम में जो 52 अलंकारों का जिक्र आता है वह आज बुनियादी दस या बारह है यह एक प्रकार की सरगमों का सिलसिला है जिसका अभ्यास चलता रहता था इन सरगमों को याद करा के रट के ठेंम तैयार किया जाता था जिससे आगे आलाप, बंदिश, उपज को गाने में मुश्किल न आए एवं सोच का दायरा खुल जाए।

बुनियादी बारह अलंकारों में आते है –

आकार	दुरन
लहक	कंपित
गमक	आंदोल
मुरन	सूत
स्फुरित	मींड
डगर	फुदक 8

अपने एक प्दजमतअपमू में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. सुनिरा कासलीवाल के साथ चर्चा में फहीमुद्दीन खां जी ने तालीम के अन्य पहलू पर भी प्रकाश डाला जिसमें वो कहते है, अलंकारों के बाद आगे चले तो ध्वनि यानी 'वाक्र' के प्रकार बज्र वाक, टैर्तिक वाक, साखा वाक, साधारण वाक। अब इतना होने के

बाद राग गायन का सिलसिला शुरू होता है, वह इस तरह आगे बढ़ता है 'सज् सहित, धन सुखर, लागडांट, तीक चौक, सुर संगत ग्रह, अंश, न्यास, उपन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पत्व, मंद्र, तार, दुई भाग राग लक्षण, फिर तीन नेजल साउंड जिन्हें नासिका, अनुनासिका और निरनासिका कहते है। जो क्रमशः दूड़ा, पिंगला और सुषुम्ना से उत्पन्न होती है, इनका प्रयोग आता है, शुद्ध मुद्रा शुद्र वाणी इसका राज यही है, इसे ही नाद योग कहा है। 9

ध्रुवपद कलाकारों को 'कलावंत' की संज्ञा दी गई है, डागर परम्परा की राग विस्तार एवं गायकी की बारीकियों का स्पष्ट व्याख्यान करे तो ज्ञात होगा के राग के आलाप के माध्यम से राग की उत्तम व्याख्या करना, इसी में इस परम्परा के ध्रुवपद गायन का सर्वश्रेष्ठ गौरव था।

"ध्रुवपद में स्वरों का शुद्ध निदोर्ष उच्चारण होता है और ध्रुवपद गायक इस बात पर सबसे अधिक ध्यान देते है, राग के बादी–संवादी और अचानक इतफाक से नहीं लगाते परन्तु उनकी शास्त्रीय उत्तमता का प्रदर्शन करने के लिए बार–बार लगाते ताकि श्रोता राग की व्याख्या को ठीक तरह से समझ जाए।" 10

इसी परम्परा में उ. फहीमुद्दीन खां डागर के पिता रहीमुद्दीन खां डागर गायन के साथ अच्छे व्याख्याता व वक्ता थे उदाहरण के लिए "पूरिया राग" के कोमल रे को वे लज्जित या विनीत कहते थे। हिंडोल के गन्धार को अग्नि समान, राग श्री के पंचम् को कमलवत् बताया अर्थात् धीरे से कोमल रे से खुलकर पंचम् पर आवाज़ को खोलेंगे तात्पर्य है कि पंचम् पूर्ण विकसित कमल के समान महसूस होगा। डागर परम्परा अपने विश्लेषणात्मक आलाप और इसमें प्रयुक्त स्वरों के सुनिश्चित लगाव और राग के विशुद्ध बर्ताव के लिए प्रसिद्ध है।

इसी रागदारी का संरक्षण करते हुए फहीमुद्दीन डागर की गायन शैली में धमाल रागों में राग केदार की बंदिश – मान तज होरी राग हमीर अरगज गुलाल आते हैं, इसी प्रकार उ. फहीमुद्दीन डागर राग भैरव (झपताल) में ध्रुवपद "शिव आदि मद अंत जौगद" गाते थे।

व्यक्तित्व ने एकदम सरल, सच्चे फहीमुद्दीन खां डागर पहनावे में सदा कुर्ता पजामा पहनना पसंद करते थे, उन्हीं पान खाने का खुद शौक था, ज्यादातर एक कटर लिए सुपारी काटते रहते थे, उनका रहन–सहन सादा था, बनावटी नहीं। उनकी शिष्य परम्परा, में कोलकत्ता कावेरी कर, रश्मि चक्रवर्ती, अर्णव चेटर्जी।

भोपाल	–	आशीष संक्रितंन
दिल्ली	–	ईफान जुबेरी
पंजाब	–	भाई बलदीप सिंह आदि का नाम आता है।

अमेरिका, फ्रांस, न्यूजीलैण्ड और जर्मनी जैसे दुनिया के अनेक देशों में ध्रुवपद गायकी की गरिमा का परिचय दे चुके डागर साहब को केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी सम्मान प्रदान कर भरत सरकार ने इनकी महत्वपूर्ण संगीत सेवाओं की सराहना की है।

सन्दर्भ सूची :

1. You tube : Dhrupad the call of the deep by Ashish Sankirtan.
2. वहीं
3. शेष, हेमन्त, कला विमर्श, पृष्ठ – 44
4. चौबे, सुशील कुमार, संगीत के घरानों की चर्चा पृ. सं. 162
5. अशोका धर जी के साक्षात्कार से उद्धृत दिनांक 11–08–2013
6. शेष, हेमन्त, कला विमर्श, पृष्ठ – 36
7. पंडित विजयशंकर, अंतनाद सुर और साज, पृष्ठ – 147
8. उ. फहीमुद्दीन के शिष्य जी आशीष संर्कितन के साक्षात्कार से उद्धृत
9. शेष, हेमन्त, कला विमर्श, पृ. सं. 42
10. तैलंग, भट्ट मधु, ध्रुवपद गायन परम्परा, पृष्ठ – 105